हम देश में प्रवास के दौरान लोगों से कहते हैं कि जाओ चित्रकूट में देखकर आओ। चित्रकूट को देखकर भारत में कई संस्थान ऐसा काम करने के लिए खड़े होने लगे हैं। अब हम विदेशियों को भी कह सकते हैं कि हमारे विकास की कल्पना क्या है? क्योंकि दुनिया को भी इस एकात्म समग्र दृष्टि की जरूरत है। हमारे काम में एक गुप्त शक्ति भी है। जो सामने नहीं आती। वह हमारा आत्मविश्वास है।

बनने तक विकास नहीं हो जाय। चित्रकूट में माननीय नानाजी की तपस्या से परिवर्तन आया है। यहां जिससे जितनी हो सकी, सबने तपस्या की है। उसी सामूहिक तपस्या से हम जंगल को नंदन वन में परिवर्तित कर पाए हैं। हमारी नई पीढ़ी को भी इतना ही विचारवान बनाने की जरूरत है। चाहे जितनी भी कठिनाई आए, चाहे जितनी विपरीत परिस्थिति हो, लेकिन हमें अपनी बुद्धि और विवेक के साथ गन्तव्य तक चलते रहना है। तो फिर एक न एक दिन ऐसा आएगा जिसमें हमने जो सपना देखा था वह हर मानव साकार होता देख सकेगा।

भारतीय विकास की अवधारणा एकदम अलग है। विकास सब चाहते हैं। विकास ज़्या होना चाहिए ये तय करना पड़ता है। इसमें जीव-जंतु, पेड़-पौधे का विकास अलग तरह से होता है। सबका मानदंड एक जैसा नहीं होता। जैसे सर्कस में हाथी का साइकिल चलाना विकास नहीं है। वह जंगल में अच्छे से रह सके उसका वही विकास है। इसलिए जब हम भारत के विकास की बात करते हैं तो उसके विकास का कुछ अर्थ होता है। अमरीका जैसा भारत के विकास का अर्थ नहीं हो सकता। पश्चिम में धनवान और राजाओं के किस्से सुनाए जाते हैं। भारत में